बोझ और भार अपने शिर लिया है? (फिर दृढ़ होकर) क्या कारणहै कि, बात बात में आज मुझे निर्बलता दबाये लेती है सहानुभूति के समान कोई वस्तु मेरे हृदय को दूब करे डालती है और अपनी ओर खींचे लियेजाती है? वह देखो यशोधर्मन कुछ अपने आपही कहरहाहै!

(सुनताहै)

यशोधर्मन। (स्वगत) आज मैं बार बार बेचैन क्यों हो उठता हूं? मस्तकमें लाँगूर कीतरह भांति भांति केविचार चक्कर क्योंकाट रहे हैं? किसी बातकोसोचता हूं, और कोईबात समझ में आतीहै; किसी बातका ध्यान न करता हूँ, और कोई बात उसकी जगह स्थान पकड़ जातीहै। ये सब चिह्न किसी आने वाली विपत्ति को पूर्व-सूचना देनेवालेहैं। ओह! आजकी रात्रिका एक एक पल युग के बराबर कटरहाहै। इन सब बातों का क्या प्रयोजन है?

बज्रदण्ड। (स्वगत) हाय! मैं बड़ा निकम्मा हूँ मैं अपनेही समान देहधारी के रक्त बहाने के लिये छिपाखड़ाहूं! जघन्यकर्म! यदि मैं भी यशोधर्मन की तरह की दशा में होता, तो मेरी क्या हालत होती? (काँप कर) अब मैं इस कामको नहीं करसक्ता, मेरा हृदय कच्ची खाताहै और हाथ पैर शिथिल हुयेजाते हैं। परन्तु मैंने हूणों का कितना निमकखायाहै? निश्चयही यदि वीर-

यशोधर्मन युद्ध भूमिमें तलवार लेकर खड़ाहोगा, तो हूणोंकी क्या दशा होगी, इसको यमराजही कहसक्तेहैं। हां! मैं बड़े असमञ्जस में पड़ा हूं; ठीक साँप छछूँदरी सी मेरी गति होरही है। इस काम को करता हूं तो इस पापमय जगत्का, इस मिट्टीके संसारका एक बड़ाभारी अनमोल रत्न उठाजाताहै, एक निर्दोष वीर मारा जाताहै; जाति भरका एक मात्र भरोसा टूटा जाताहै, और जो नहीं करना तो विश्वासघात, और स्वार्थ-हानि सामनेहैं। (बज्रदण्ड रोमाञ्चित होजाताहै, उसके हाथ से तलवार छूट पड़ती है उसका शब्द सुनकर यशोधर्मन चौकन्ना होजाताहै)

यशो धर्मन। (घबराकर) यह क्या है? यह क्या है? यह झन्नाहट कहां से आई—

बज्रदण्ड। (स्वगत) बस अब समय नहीं है, अब काम बिगड़ताहै, मेरे प्राण भी खटाई में पड़ा चाहते हैं।

{ तलवार उठाकर, यशोधर्मनपर टूटता है। यशोधर्मन अपना पलँग उठाकर, बज्रदण्ड पर फेकता है। जबतक यशोधर्मन बचकर निकल पावे, बज्रदण्ड उसपर तलवार फेकता है। यशोधर्मन घात के कारण गिरजाता है, बज्रदण्ड उसे मराजान, छोड़कर, भाग जाताहै। }

तीसरा गर्भाङ्क ॥

युद्ध-भूमि ॥

क्षत्रियों की छावनी ।

(मैदान में सेनापति ऊदल और उमा टहल रहे हैं ॥)

(राग गौंड मलार)

से० ऊदल । लखौ यह लसत गगन में चन्द । हरियाली जो जगमें छाई, शशिने आकर्षण करली-न्हीं, नभमें छायावाकी दीन्हीं, सब कहँ छरा दिखा सुखकन्द । तारागण अस शोभित प्यारी, जैसे उपवन उज्ज्वल क्यारी में बेला, मलिका लहरत हैं, श्वेत रङ्ग दरसा अमन्द ।

(राग गौंड मलार)

उमा । प्रियतम ! जगकी येहीरीति । दोकाजनको कारण इकहो, सुनो प्रेमकी रीति यही है, पै जब कारण नष्ट होतहै, काजनहूकीहै फिर भीत । सुनो प्रकृत को नियम यहीहै, कबहुँ न नाश मान यह होय, सूरजके आवत छिपजावत तारागण ये सँबै अतीत । पैनीलो नभ कबहुँ न मिटिहै, जैसे सज्जन जनकी प्रीति, यही नियम सबमें लगजैहै, यहहै सारे जगकी नीत ।

से० ऊदल । (हँसकर.) सत्य है, बहुतठीक कहा ! प्यारी, कहीं हमारा तुम्हारा भी ऐसाही हाल न हो । क्यों, क्या कहतीहो ?

उमा! (गम्भीरता से) यदि कारण के नष्ट होने से एक कार्य नष्ट होसक्ता है, तो क्या दूसरा बना रहेगा? ऐसा न होना न्यायके विरुद्धहै। कार्य कारण भाव अनन्त है; निरन्तरहै।

सेना पति ऊदल। वाह! बस! एक छोटीसी हँसी में रुष्ट होगईं?

उमा। (कटाक्ष करके) रुष्ट काहेको होगई हूँ, सच्चीबात कहतीहूँ।

(सेनापति ऊदल आलिङ्गन करना चाहता है)

उमा। (अलग होकर) प्रणंकी कुछ सुधि है? क्या ऐसी जल्दी भूल गये? नायक के लिये तो यह काम उचित नहीं।

(मुसकराती है)

से० ऊदल। प्यारी, मेरे प्रणको लौटाने में हिमालयकी कठिनता और बज्र कठोरता भी हार खाजावेगी, पर तुम्हारी मधुर मुसक्यान और तुम्हारे अत्यन्त कोमल गात मेरे बज्र से भी बज्र हृदय और शरीर को मोमकी तरह पिघलानेमें समर्थ हैं। अस्तु, फिर भी प्रण पर दृढ़ हूँ।

(नेपथ्य में कुछ दूरीपर)--सेनापति महाशय! सेनापति महाशय!

से० ऊदल। कौन है? (उमासे) इससमय हम लोग कहां हैं? (चारोंओर देखकर) ओह! टहलते टहलते छावनीसे एक कोससे भी अधिक निकल आये। फिर यहां हमें कौन बुलाताहै? क्या

सेनामें कुछ गड़बड़हुई है ? प्रबन्ध तो मैं सब ठीक कर आयाहूं। कल प्रातः घोर संग्रामकी तय्यारियां भी होचुकी हैं। क्या कारणहै ?

उमा। कुछ समझमें नहीं आता।

(पुनः वैसाही शब्द होताहै)

से० ऊदल। प्यारी, तुम यहीं ठहरो। मैं थोड़ी दूरीपर जाकर देखताहूं।

{जैसा जैसा से० ऊदल जाताहै वैसा, वैसा शब्द अगाड़ी बढ़ता जाताहै। कुछ दूरीपर क्रोध भरी बातोंकी झमक सुनाई पड़ती है}

{भूमिपर गिरनेसे जैसा शब्द होताहै। थोड़े समय बाद से० ऊदल रक्तभरी तलवार हाथमें लिये आता है।}

उमा। (घबराकर) यह क्या है ?

से० ऊदल। (उमाकी स्वाभाविक तेजस्वितासे कँपकर) ऐं--ऐं--(सँभलकर) प्यारी, ये लोग चोर थे, धोके से मुझे मारा चाहते थे। मुझे जांघ में चोट आगई है। चलो छावनी में जल्दी चलो। मेरी बुद्धि ठिकाने पर नहीं है, तुमहीं आगे आगे होकर चलो।

उमा। (व्याकुल होकर) क्या प्राणनाथको चोट लगगई है ? हाय! मैंने आपको क्यों जाने दिया ? अस्तु, जल्दी चलें मलहम, पट्टी बांधें।

(दोनों गये)

चौथा गर्भाङ्क ॥

हूण छावनी–बन्दीगृह ।

(हथकड़ी और बेड़ियों में जकड़ाहुआ से० ऊदल पृथ्वीपर बैठाहै ।)

(राग कालिंगड़ा)

से० ऊदल । (सशोक) हाय ! कामिटिहै भारत–नाम ?
सब विद्याका धूरी मिलिहै, तत्त्व ज्ञान औ शास्त्र
धवल हवेलीं अबका बिनसैं बिनसै सबधन धाम ?
आर्य-भ्रातका कटिहैं मरिहैं, जरिहैं हूणन हाथ,
आर्य-नारिगण सत पन खोंहैं, काहूणन हित-काम?
विद्यालय आश्रम का नसिहैं, बिनसैं कासब पीठ,
आर्य-बीरका मौन साधके, देहैं तन औदाम ?

हाय छल ! हा धोका मुझे किस कपट के साथ बन्दी बनाया ! अब निश्चयही कायर और दुष्ट हूण जीतैंगे । हृदयकी हृदयही में रहगई ! जो जो यत्न प्रयत्न, तरकीबें और पेंच मैंने इस युद्ध के लिये सोच रक्खे थे, वे निष्फलहुये ! हां, एक आशा है, प्यारी उमा को मैंने कुछ पेंच बतलाये थे, कदाचित वह हमारे सहकारी सेनापति को बतलावे, पर उसका चित्त भी तो ठिकाने न होगा। हा ! क्या उस स्वदेश-भक्ता बालिका के कभी दर्शन होंगे ? असम्भवहै। नितान्त असम्भवहै ! वह दीन कुमारी प्राण तज देगी, हाय मेरा

चन्द्रमा गगन विलीनहोजावेगा; मेरे सूर्यका अस्त होजावेगा ! इधर मेरी क्या गति होगी ? मैं ठण्डे रक्त में मारा जाऊंगा, मेरी कुत्ते की मौत होगी; मैं सताया जाकर, मारा जाऊँगा, निर्दयी हूण, जिन के कोष में उदारता और दया के शब्दही नहींहैं मुझे भेड़ बकरी की तरह मार डालेंगे। हा ! ईश्वर के अतिरिक्त मेरा इस समय कौन सहायक हो-सक्ताहै ? हाय ! मनुष्य की बुद्धि बड़ी विकार युक्त है। यदि सुख-समय ईश्वरका नाम स्मरण किया जाय, उसे मन-मन्दिर में प्रतिष्ठित किये रहैं, तो कभी विपत्ति न आवे; और यदि आवेभी तो क्षण मात्र में उसका प्रतीकारभी होजावे। इससे बड़ा से बड़ा भी दुःख क्षणभंगुर सा मालूम होताहै, क्योंकि ईश्वर पर एक तरहका भरोसा सा बना रहता है, अन्तःकरण ऊँचा बना रहताहै और सुकृतकी सुधि के कारण आत्मा विद्रोह नहीं क-रता। हाय ! आज उसमें से मुझे कोई सहारा नहीं है। मैं ईश्वरके विना बेपतवारकी नौका हूँ। (पैरकी आहट सुनकर) बन्दी गृह बड़ा कठिन है, तिसपर हथकड़ी और बेड़ी भी तो अत्यन्त कठिनहैं ! अब मैं बाहर नहीं जासक्ता। हाय ! कल मेरे शरीर की एक एक हड्डी अलग की जावेगी, ज़ोड़ ज़ोड़ उखाड़े जावेंगे और प्रत्येक स्थान का माँस नोचा जावेगा। मैं इससे डरता बिलकुल नहीं हूँ, पर शोक और ग्लानि इसी की

है कि, यह अनमोल तन मिट्टी मोल भी न जावेगा। स्वदेश हितार्थ समाप्त होकर, पूरा मूल्य पाना तो इसके कुभाग्यही में नहीं! (उत्तेजित होकर) तो क्या मैं कायरों की मौत मरूंगा? सिंह चाहे कैसीही बुरी दशा को पहुँच गया हो, पर वह अपने वैरियों को विकट और बांकी झपट दिखाये विना नहीं रहता।

(पञ्जार का प्रवेश)

पञ्जार। क्या सेनापति ऊदल सानन्दहैं?

से० ऊदल। (घृणा से) बन्दी ऊदल का कुशल-प्रश्न-कर्ता कौन है?

पञ्जार। (हँसकर) लँगोट बन्ध पञ्जार!

से० ऊदल। (तमककर) क्या पञ्जार? दुष्ट और म्लेच्छ हूण—नायक पञ्जार? मेरी कुशल मत पूछ; क्योंकि मेरी कुशल से तेरा, तेरे सेनानायक मिहिरकुल का और तेरी घृणित जातिका पूरा सत्यानाशहै।

पञ्जार। (तड़क कर) मूर्ख कहीं का!

नहीं जानता कि, तेरी जीवात्मा पञ्जार के विकट खड्ग की धार पर अटकी हुई है। धूर्त नहीं तो! अधिक बक बक करैगा तो चाण्डाल को बुलाकर, अभी तेरी जीभ उखड़वा लूंगा; क्योंकि पागल को वीर पञ्जार अपने हाथसे नहीं मारता।

से० ऊदल। (सदर्प्प) रे कायर नीच हूण! वीर बनते हुये तुझे लज्जा नहीं आती? पापात्मा म्लेच्छ, तेरी वीरता तबही समझूं, जब तू खुले मैदान मुझे किसी

विद्या में जीतले। पामर पञ्जार, चोर—कर्म करके, तुझे लज्जा नहीं आती; तेरी आँखें नीची नहीं होतीं?

पञ्जार। (अत्यन्त दर्प से) बस बस, अधिक मुँह खोला तो उस बकवादी में इसी खड्ग की नोक ठूँस दूंगा। सुन मूर्ख, यदि तू अपने प्राण बचाना चाहताहै, तो अपनी स्त्री को हमें सौंप। वह यद्यपि आर्य-छावनी में है, पर मेरे पूरे अधिकार में है। जब चाहूं तब उसे हठात् और बलात् बुलाकर अपनी कामेच्छा पूर्ण करसक्ताहूं। पर नहीं, यह कर्तव्य सेनानायक के लिये अनुचित है। एक बार तू कहदे कि, उमा तेरी हुई। दुरात्मा, मैं तेरी स्त्री को भली भाँति जानता हूँ। बस, जब तू यह कहदेगा कि, वह कोमलाङ्गी तेरी हुई, मैं तेरे प्राण बचादूंगा; क्योंकि तेरे प्राण मेरेही हाथमें हैं। बोल क्या कहताहै?

से० ऊदल। (सिंहकी भाँति गर्जकर) क्यां कहा? ए, ए, ए, क्या कहा? (अत्यन्त क्रोध के कारण कुछ मुँहसे नहीं निकाल सक्ता) पञ्जार! पञ्जार! तेरी मृत्यु! तेरी मृत्यु!

{एकबड़े झटके केसाथ हथकड़ियां कड़कड़ा डालताहै और पैरोंमें झटके देकर बेड़ियां तोड़ डालताहै। इसके पश्चात् बिजली की तरह तड़तड़ाकर पञ्जार के ऊपर टूटताहै और उसका खड्ग उसके हाथसे छीन लेता है। पञ्जार अवाक् खड़ा रह जाताहै।}

से० ऊदल। (विजयी आकृतिसे) भयभीत मतहो, तू एक उदार शत्रुके हाथोंमें है। तेरा शत्रु हूण नहीं; आर्य है। क्या तू अपने वचनों के लिये लज्जित है? बोल; क्योंकि अब तेरा बध, बन्धन व छुटकारा मेरे हाथों में है; मेरा तेरे में नहीं।

पञ्जार {झटसे अपने वस्त्रोंके नीचेसे कटार निकालताहै और ऊदल के ऊपर झपटताहै। उदल दांव बचाजाताहै और कैंची बांधकर, पहिले पञ्जारके दांव पेच बचाताहै, पीछे से अवसर पाकर, ऐसा हाथ मारता है कि, उसका शिर धड़ से भिन्नहोजाताहै।}

(नेपथ्यमें) पकड़ो २ भागने न पावे। सेनानायक वीरवर पञ्जारका चाण्डाल आर्यने रक्त बहादिया है दौड़ो दौड़ो।

(१५। २० हट्टे कट्टे सैनिकतलवार खींचे आतेहैं। वे सब ऊदल पर टूट पड़तेहैं, उसे तलवार फेंकने का अवसर नहीं मिलता और घिर जाताहै। वे सब उसे मिहिर कुलके पास पकड़कर, लेजातेहैं।)

पांचवां गर्भाङ्क ॥

हूण छावनी-मैदान ॥

(कुछ हूण सैनिक मद्य लिये आते हैं)

एक । अजी वाह! अजी वाह! अजी वाह ! अजीवाह!
हुये हम लोग आज भारतकेनाह। (नृत्यकरताहै)

दूसरा। दुर पागल, अशुद्ध कविता पढ़ताहै। अबे यह कह,
हूण हुये वज्र दण्ड, आर्य हुये अस्थि-खण्ड ।
हूण हुये राज-रज, आर्य दास त्याग लाज।
अजीवाह ! अजी वाह ! अजी वाह ! अजीवाह !
विना किसी रोकटोक हूणहुये आर्य-नाह ।

तीसरा । अभी हुआ क्याहै ? इतने काहेको फूलते हो? क्या अभी यशोधर्मन जीत लिया गयाहै ? सेनापति ऊदल और उज्जैन-सेनापति को बन्दी बना लेने से अधिक प्रयोजन न बनेगा। क्या आपने नहीं सुना कि, यशोधर्मन अस्सी सहस्र सुसज्जित और प्रचण्ड सैन्यलिये चला आताहै?

पहिला। अजी आने भी दो। हूणों के सामने पृथ्वीभर के मनुष्य घासपात हैं । क्या मजाल जो कोई हमारा सामना पकड़ सके !

दूसरा । हां, यहतो बतलाओ कि, बौद्धोंसे बुरे उस आर्य-चाण्डालका महाराज मिहिरकुलने क्या कियाहै?

पहिला । (हँसकर) होना क्या था ? पञ्जारको मारने-वाले के साथ कैसा बर्ताव होना था ? नरसों के

दिन सेनापति ऊदलकी हड्डियोंके भांति भांतिके गहने बनाये जावेंगे। एक अच्छा हूण कारीगर खोजागया है, वह उसके अस्थिपञ्जर को काट छांटकर कई एक मालाएं और हार बनावेगा। उन आभूषणोंको पहिनकर, महाराज मिहिरकुल अपने कई पदाधिकारियों के साथ आर्यों के मंदिर और बौद्धों के मठ में जावेंगे और उन्हें नष्ट करेंगे व आर्य और बौद्ध रक्तसे, उन्हें सुन्दरता से रंगदेंगे।

सब। अहाहा! बहुत अच्छा होगा, भाई बहुत अच्छा होगा!

दूसरा। अच्छा यह तो बतलाओ कि, आर्यलोग इतने व्यूह बनाते हैं, बड़ी चालाकी से लड़ते हैं; कभी अग्रपंक्ति, कभी पिछली और दाईं, बाईं इत्यादि पंक्तियों को वे रथ के पहिये की तरह घुमादेते हैं और मोर्चे भी बड़ी सावधानी से लगाते हैं, पर क्या कारणहै कि, उन्हें बार बार पीछे हटना पड़ता है? ऐसा मालूम होताहै कि, हमलोग उनके मानो भेद जानते हों। परसों जब मालवा की आर्य-सेना ठोस त्रिभुजाकार लड़रही थी, यकायक लोहदण्ड सेनापतिने सबको षष्ठ भुजाकार पंक्ति में क्यों विभक्त होनेकी आज्ञा दीथी? इसके बादही आर्यसेना भी षष्ठभुजाकार होगई। इससे सिद्ध होताहै कि हमलोग प्रतिदिन उनके भेद जानलेते हैं। जब मालव-सैन्य लड़ते

लड़ते शिथिल पड़चली तब पूर्व-गठित यत्ना-नुसार आठसौ वज्रपंक्ति के प्रचण्ड क्षत्रिय आ पहुँचे, क्या कारण है कि, उसीतरह सहस्रहूण भी उनके पीछे छिपाये गये थे? यही कारण है कि, आर्यलोग धीरे धीरे हटरहे हैं, उनका खेत छूटताजाता है। क्या आपमें से कोई हमें इसका कारण बतलावेंगे?

पहिला। (कानपर हाथ रखके) यह एकबड़ी गुप्तबात है। सुनो, पर किसी से कहना मत; क्योंकि जङ्गी-नियम तोड़नेवालें को प्राणदण्ड से कम दण्ड नहीं मिलता। तुम वज्रदण्ड क्षत्रिय को जानते हो या नहीं? अवश्य जानते होगे; क्योंकि वे हूण सेनाके एक बड़े भारी पदाधिकारी हैं और मिहि-रकुल महाराज के विश्वस्त सेवकहैं। वज्रदण्ड का रंगरूप, रहन सहन, चाल ढाल, बोलचाल-सब सेनापति ऊदल से मिलते हैं। अधिक क-हनाव्यर्थ है, वज्रदण्डने धोकेसे ऊदलको पकड़ लिया और बन्दी बनाकर, हूण-छावनी में भेज दिया; आप स्वयं ऊदल बनकर, आर्य-सेनापति बनगया। यही कारण है कि, उनके द्वारा हमारे सेनापति को उस सेनाके सब भेद मालूम होते रहतेहैं। वज्रदण्ड बीमारी का बहाना लेकर प-लङ्ग की सेवा करते हैं, पर उन्हें युद्धके ब्योंत इत्यादि बतलादिये जाते हैं, और वे उन्हें गुप्त दूतों द्वारा हमलोगों में प्रकट करदेते हैं।

तीसरा। (चाव से) सुना है-सेनापति ऊदलकी स्त्री भी बड़ी सलोनी है ?

पहिला (हँसकर) क्या तुम्हारी भी लार टपकी ? अरे यार,वह वस्तुही ऐसी है। उसपर मिहिरकुल महाराज, लोहदण्डसेनापति और वज्रदण्ड-क्षत्रिय-इन तीनों के दांत लगेहैं; देखें शिकार किसके हाथ जाता है ! (हँसकर) पञ्जार महाशय तो लार टपकाते२ हीगये !

दूसरा। मित्र, वज्रदण्ड बड़ा चालाक है, ये सब मुँह ताकते रहजायँगे, वहं पट्ठा उसे लेकर, चम्पत होजावेगा।

पहिला। हां, होसकताहै, पर यह तो बतलाओ कि,हूण-विमुख होकर, वह क्षत्रिय जावेगा कहां ? कोई भारतवासी उसे न चाहेगा।

दूसरा । अजी वह कहीं न कहीं सह लगाही लेगा।

तीसरा। अच्छा, यह सब हुआ। आनन्दामृत बहाओ। कुछ गाना भी हो।

(सब मद्य पीकर मस्तहोते हैं और नृत्य करते हैं)

सब। (सनृत्य) (कहरवा)

तेरे ऊँचे ऊँचे जोबनोंपै जीया ललचाय।
जीया ललचायप्यारी,जीयाललचायप्यारी,जीयालल२।
तेरे ऊँचे ऊँचे जोबनोंपै जीयाललचाय।
मद्य रँगीली रङ्ग रंगे हैं, तू कहँजावै हम कहँ छोड़।
मुकुरो जनि तनि इतहिं चितैलो जावो काह लजाय।
तेरे ऊँचे ऊँचे जोबनोंपै जीयाललचाय।

चाहे मोरी जान निकारो, चाहे अबहीं जी सों मारो
पै जनि प्यारी नैना मारो, सब कोउ उन्हेंडराय।
तेरे ऊँचे ऊँचे० ।
आओ गोरि गले लगजाओ, चूमा देओ लाख,
(सब हँसते हैं)
आओ आओ जनि लजियाओ, सूरत जाहुबताय।
तेरे ऊँचे ऊँचे जोबनोंपै जियाललचाय।
(परस्पर मार पीट करते, विविध नाट्य करतेहुये, झूमते झामते जाते हैं)



चौथा अङ्क ॥

पहिला गर्भाङ्क ॥

उज्जैन ॥

राज पथके ऊपर मकान ॥

(चन्दो कुटनी का प्रवेश)

(कहरवा)

चन्दो । मेरा चन्दो कुटनी नाम, मेरा चन्दो कुटनी नाम।
चन्दा कैसा मुखड़ा मेरा था यह क्या अनमोल!
पै अब बुड्ढी हुई इसीसे लीन्हा दूजा काम।
मेरा चन्दो कुटनी नाम, मेरा० ।
बड़े रँगीले पच्छी फाँसूं, केवल बायें हाथ,
बड़े बड़े शिर यहां झुकाते, दे गांठीका दाम।
मेरा, चन्दो कुटनी नाम, मेरा० ।
यद्यपि सारी त्वचा सकुचगई, गड्ढे होगये गाल,
तौभी मनकी अब भी वोही; चाम नहीं, पर काम।
मेरा चन्दो कुटनी नाम, मेरा० ।
लखों उल्लूकर मैं लाती, जोबन मद उनको पिलवाती,
सारे तनको ढीलवाती करती हूँ बेकाम।
मेरा चन्दो कुटनी नाम, मेरा० ।
सहसों घर मैंने नासे हैं, बौड़म भी लाखों फांसे हैं,
मूरख भी कइ इक झांसे हैं, करके काम तमाम।
मेरा चन्दो कुटनी नाम, मेरा० ।
विष देकर, कइयोंको मारा, जीताही कइयों को जारा,

पै क्या मनुआं मेरा हारा ? हौं भी तो गुण धाम।
मेरा चन्दो कुटनी नाम, मेरा०।
(नेपथ्य में) अजी किवाड़ खोलो चन्दो !
चन्दो। (सदर्प) कौनहैरे ? क्या चाहताहै ?
(नेपथ्य में) क्यों चन्दो, इसी को सत्य कहते हैं ? क्या ऐसी जल्दी भूल गई ? यहां तो तुम्हारी ही सुधि बनी रहतीहै पर तुम्हें क्या चिन्ताहै ?
चन्दो। (स्वगत) कोई नया पत्ती ल्हासे में आया, देखें सुसरा सुवर्ण-पत्तीहै, या कोरा उल्लू ?
(जाती है और एक सुसज्जित युवाको लिवा लाती है)
युवा। चन्दो अब तो जान जाती है, भला दयाकरो।
चन्दो। सौ मुद्रायें तो बहुतही कम हैं। (नख़रे से) भला इतनेही में काम कराना चाहतेहो ?
(नेपथ्यमें) ओ चन्दो,
युवा। (स्वगत) छिनाल ने न जाने कितनोंका सत्यानाश किया है ! देखूं आज किसतरहसे नचती है ? डाकू राम के सामने भला कौन दांत खोल सकता है ? (प्रकट) इधर हम हैं, ख़बरदार अभी मत आना; नहीं तो बचाबस, दै तेरे कीहोगी।
चन्दो। ओ हत्यारे दुष्ट क्या तेरे एक के लिये मैं ४।५ आसामियों को लौटा दूँ ? ले ये तेरे रुपये पड़ेहैं ?
(रुपये फेंक देती है)
युवा। हां छिनाल, देखताहूं भला। जानती है चुड़ैल, किसके पाले पड़ी है ? देखता हूँ भला तेरा कुटनपन ?

(युवा उसके ऊपर चढ़ बैठता है और छुरियों से घायल करता है और उसे मराजान, लूटलाट कर भाग जाता है।)

(रक्त भरी तलवार हाथ में लिये बज्रदण्ड क्षत्रिय का प्रवेश)

बज्रदण्ड। मेरा माता ! मेरी मां ! तुम्हारी यह क्या दशा होरही है ? तृप्त होओ; क्योंकि मैंने उस चाण्डाल को मारडाला है।

चन्दो। बे-बे-टा-(इशारे से पानी मांगती है)

(बज्रदण्ड उसे पानी लाकर पिलाताहै, वह कुछ चैतन्य होती है)

चन्दो। बेटा बज्रदण्ड ! अबमेरे पापमय जीवन का अन्त हुआ चाहता है। ध्यान देकर सुनो मैं तुम्हें एक बात बतलाती हूँ, वह भेद है, और तुम्हारे कामका है। तुम मेरे पुत्र नहीं हो।

बज्रदण्ड (बिस्मित होकर) क्या कहा ? मैं तुम्हारा पुत्र नहीं ! आश्चर्यहै ! अच्छा यह तोबतलाओ कि, तुमने मुझे युद्ध-भूमि से इस शीघ्रता से क्यों बुलाया ? क्या कोई आवश्यकीय काम था ?

चन्दो। आवश्यकीय ? अत्यन्त आवश्यकीय ! सुनो ! तुम रन्थम्भोरके राजा भीमसेनके पुत्र हो। चौंको मत, तुम सचमुचही राजपुत्रहो। मैं पापिन तुम्हारे पिता के प्रेम में फँस गईथी। इतनेहीके बीचमें तुम्हारे पिताने बिवाह करलिया। उन्होंने अपनी बिवाहिता रानीको गुप्त रूप से रक्खा और गुप्तरूप से एक पुत्र भी उत्पन्न होगया। यही पुत्र-युद्धवीर आज कल रन्थम्भोर का राजाहै। जब वह ४ वर्ष

का होगया, और इसी बीचमें मैंने देखा कि, तुम्हारे पिता मेरी प्रेम–फाँस को धीरेधीरे काटते जातेहैं । तब मैं बड़ी क्लान्त हुई । इसीसमय तुम दो भाई एक साथ उस रानी से हुये । एक का नाम ऊदल है दूसरे तुम हो । अबतो मैं सर्पिणी की तरह और भी खिन्न हुई । तुमको चुराकर मैं उज्जैन चली आई और तुम्हारा पालन-पोषण करने लगी । मैं पापिन तो थीही, और भी पाप-रत हुई और करोड़ों कुकर्म किये जो अब आंखों के सामने फिर रहे हैं । चारों ओर मुझे अग्नि और रक्तही दिखाई पड़....ड़–ताहै । (मूर्च्छित होतीहै)

(थोड़े समय छटपटाने के बाद मृत्यु–लोक को गमन करतीहै)

बज्रदण्ड । (स्वगत) क्या मैं सेनापति ऊदल का भाई हूँ ? हा सर्व नाश ! मैं अपनेही भाई का घातक हूँ ! माता सम भ्रातृ–पत्नी के ऊपर मेरी–कुदृष्टिहै, मैं दुष्टों का कुचक्रहूँ ! स्वदेशी द्रोही हूँ ! हा पाप ! हा घोर पाप ! (छाती पर कराघात करके गिर पड़ताहै) (मूर्च्छा से. जाग्रत् होकर) हा ! मेरे ही कारण मेरा प्यारा भाई बन्दी हुआ, मेरेही दुष्ट के कारण उज्जैन सेनापति धोखे से मार डाला गया । हा ! इन सब पापों का क्या प्रायश्चित्त होगा ? घोरतम पाप मैंने पूज्यपाद यशो धर्मन के मारने का यत्न किया, पर वे ईश्वर कृपा से बच गये । (दृढ़ता से) बस, प्रायश्चित्त यहीहै कि,

म्लेच्छों का संसर्ग त्याग, सच्चा आर्य बनूं, भाई को किसी भाँति बन्दी गृह से मुक्त करूं और हूणों को-मार भारत नष्ट कर्ता हूणों को--
भारतमातृ हन्ता हूणों को भारत से मारभगाने के रण अन्दोलनमें भागलूँ। (तलवार खोलकर) अबतक यह खड्ग दुष्टता व्यर्थ और घोरतम हिंसा और पापमें लिप्त रहाहै। इसको तोड़कर फेंकताहूँ और नया आर्य--खड्ग धारण करता हूँ। (खड्ग तोड़कर फेंकता है) समय नहींहै। शीघ्रही युद्ध-भूमिकी ओर जा प्रस्थान करता हूँ। (कुछ सोचकर) इसवृद्धा का जिसने मुझे पाला पोसा और रक्षाकी अन्तिम संस्कारभी करडालूं, क्योंकि यह मेरे सुख, दुःख दोनोंहीकी प्रधान कारणहै। (चन्दोकी मृत--देह लेकर, जाता है)

दूसरा गर्भाङ्क ॥

हूण छावनी, मैदान ॥

(एक डेरे के बन्दीगृह में सैनिकों से घिराहुआ। से०ऊदलपड़ाहै)

(राग पीलू धुनि झिंझौटी)

से०ऊदल। उदासभाव से--

शेष अब होन चहत यहरात,

तारागण कछु समल भये हैं, चन्द कछुक निस्तेज, निद्रा ने सब कहँ बस कीन्यो, सन्नाटो दरसात। निद्रा ने निज मुहरलगाई पृथ्वी भरके गात, सनसन केवल पवन डुलतहै,और न कछू लखात। प्रात होतही बहुतिक रोगी हुइ हैं बहुतिक शान्त, बहुतिन कहँ प्रातः सुख देहैं, करि हैं बपु अवदात। जिन का भयहै उन कहँ सूरज काटेगो जिमि सांप, चिन्ता नदं में उनहिं डुबोके लेगो कष्ट जगात। निद्राके परदा में जिन कहँ मिल्यो रह्यो कछु चैन, सो तेजस्वी रविकहँ लखिके, फँस जैहैं दुख पांत। कमल खिलैंगो, पक्षी गणहू करिहैं स्वागत-सूर्य, लवा, हवा में ऊँचो होके, गावैगो हरषात। पूर्व--दिशा मुस्करा मुस्करा मेलै पिय गलबांह, पापाच्छादक पुण्य प्रकाशक तम कहँमारै लात। ये सब साज, लाज तज हुइहैं, पुनि हुइहैं गन--रात, गङ्गा यमुना सदा बहेंगी, हुइहैं सदा प्रभात, हाय! न पै से-

नापति ऊदल लखिहैं नवतम राशि, एक दिवस को सूर्य छोड़के, लखिहैं नहिं निशि नाथ। जगत सदा ऐसोहि रहैगो, इक जावै, इक जाय उमा प्यारि औ ऊदल सैनप मुद हैं सँग जलजात। शेष अब होन चहत यह रात।

आजका दिन मेरी आत्माकी अन्तिम यात्राहै। जब मैं भूत काल की ओर आंख फेरताहूँ, तो निराशा का समुद्र तुरन्त भविष्य की गोद में लहरें मारता हुआ दिखलाई पड़ता है। यह विचारकर कि, मैंने ईश्वर से विद्रोह किया अपनी आत्मा को खड्डों में ढकेला, और भी क्लान्त होता हूँ। परन्तु ईश्वर बड़ा दयालु है, वह मुझे क्षमा प्रदान करेगा और मरतेसमय इतना साहसदेगा कि, मैं घबरा न जाऊँ और बीरों की भांति देश के काम में प्राणदूँ। यही चाहता हूँ, यही मेरी आन्तरिक लालसा है कि, मैं शान्ति और धैर्य के साथ प्राण अर्पण करूँ। मेरे भाग्य पर मुद्रा लग चुकीहै, भारतमाता और स्वतन्त्रता भगिनी को सर्व शक्तिमान् जगदीश्वरके सहारे छोड़ताहूँ।

(बोलबन्द होजाता है और बिलख २ कर रोता है)

(नेपथ्यमें) हट जाओ, क्या तुम मुझे नहीं पहिचानते यह! बड़े असभ्य सैनिक हो? क्या बज्रदण्ड क्षत्रिय को कोई कहीं भी जाने से रोकसकताहै? (नेपथ्यमें "क्षमा" "क्षमा" का शब्द होता है)

(बज्रदण्ड का प्रवेश)

से० ऊदल। (स्वगत, व्याकुलता नाट्य दिखाकर इसी दुष्ट का नाम बज्रदण्ड है? इसी म्लेच्छाचारी स्वदेश द्रोही कलङ्की क्षत्रिय का नाम बज्रदण्ड है? इसी दुष्ट के कारण आज मैं इस दशाको पहुँचा हूँ।) विस्मित होकर इसकी सूरत मुझ से क्यों मिलती है? क्या इसने छद्मबिष धारण किया है? हा उमा! तेरी क्या गति होगी?

बज्रदण्ड। (सेनापति ऊदलको हीनदशामेंदेख, आंखों में आंसू लाकर, साष्टांगप्रणाम करके) प्यारे भाई! प्यारे भाई!

(मूर्च्छित होता है)

से० ऊदल। (विस्मित होकर) क्या अब भी छल? क्या मेरे अन्तिम फलों में भी कपट? क्या यह मेरा भाई है?

बज्रदण्ड। (जाग्रत होकर) प्रियतात! इस दुष्ट को क्षमा करो, इसने आपको जो जो कष्ट दिये हैं इसके कारण आप को--जो जो क्लेश मिले हैं, उन्हें क्षमा करो।

से० ऊदल। (घबराकर) उमा? मेरी उमा?

बज्रदण्ड। माता उमा, पतिव्रत की धवल स्तम्भ—सत्यव्रत की बीर सती उमा प्रसन्न है। दादा, वह मुझेही से० ऊदल जानती थी, पर ईश्वर साक्षी है कि, घोर पापी बज्रदण्ड ने माता उमाकी ओर आंख उठाकर, देखने का साहस नहीं किया है।

पितृवर ! समय नहीं है, कोई प्रश्न मत कीजिये उठिये, उठिये, यहां से चलिये। आर्य--माता अपने सपूत के वियोगसे रोरही है।

(हथकड़ी, बेड़ी काटडालता है)

से०ऊदल। (खड़ाहोकर) क्या मैं स्वप्न देखरहा हूं ? निश्चयही स्वप्न देखताहूँ, क्योंकि मेरा कौन उद्धारकर्ता यहां बैठा है ? मेरे तो यहां सब शत्रु हैं। (सामने हथकड़ी बेड़ी देखकर) पर हथकड़ी किसने काटीं ? (बज्रदण्डको देख) यह सामने मेरा उद्धारकर्ता खड़ा है। क्या यह देव दूत है ?

बज्रदण्ड। (सविनय) प्यारे भाई बिलम्ब न कीजिये। मैं देव दूत नहीं हूँ। मैं आपका भाई हूँ, और अपने को आप से छोटा मानता हूँ। हम दोनों एक साथ उत्पन्न हुये थे। उठिये, उठिये समय नहीं है।

से०ऊदल। (गद्गद हो) अब समझा ! पिताजी ने कई बार इस बातकी चरचा छेड़ी थी, पर तात ! अबतक तुम कहां थे ? स्वदेश--बैरी हूणोंका क्यों सङ्ग दिया ?

बज्रदण्ड। (सविनय) कृपया अभी यह कुछ न पूंछिये बाहर दो घोड़े खड़े हैं। बहुत जल्दी इस कष्ट गृहको छोड़िये, कहीं नवीनआपत्ति न आकरपड़े।

से०ऊदल (रोकर) प्यारे भाई ! जन्मके बिछुड़े हुये सहोदर,। जीवन दाता तात ! आओ एक बार

छाती से लगें, तप्त--छाती को शीतल करें, आन्तरिक दावानल प्रज्वलित हृदयको जुड़ायें और सर्व शक्तिमान् निराकार परमेश्वरको धन्यबाद दें।

(दोनों छाती से लगते हैं)

(नेपथ्य में) पहरे में कुछ गड़ बड़ तो नहीं है ?

बज्रदण्ड। (कांपकर) बस, बुराहुआ ! लोहदण्ड आता है।

से०ऊदल। तुम्हारे पास शस्त्र हैं ?

बज्रदण्ड। एक भी नहीं, पर बुद्धि और छलका ब्रह्मास्त्र है। ठहरिये, मेरे पास हथकड़ी, बेड़ियां दोनों हैं।

(से०ऊदलको हथकड़ी और बेड़ियां पहिनाताहै)

(लोहदण्ड का प्रवेश)

लोहदण्ड। कौन ? दो मनुष्य ! हैं ! बज्रदण्ड ! भयानक राज्यविद्रोह !

बज्रदण्ड। (चिहरेकी भयानक आकृतकर, तमककर) कौन ? सेनापति लोहदण्ड ? क्या यही सैनिक-नियम है ? क्या महाराज मिहिरकुल का पूर्ण विश्वास वीर लोहदण्ड के मुखसे राजविद्रोही उच्चारित हुआ है ? लज्जा की बात है ! लज्जा की बात है !

लोहदण्ड। (कुछ लज्जित होकर) फिर आप यहांपर क्यों आये हैं ?

बज्रदण्ड। (ब्याजस्तुति नाट्य कर) जी ? जिसको मैंने पकड़ा था उसको फिर छुटाने के लिये आयाहूँ ! अब बड़ी कठिनता पड़ी, सेनानायकसे कहदेंगे

कि, आपहमारे लिये जो कुछ आज्ञा दिया करें, वह सेनापति लोहदण्डके द्वारा दियाकरें । सत्य है पदाभिमान से मनुष्यत्व और मित्रता--दोनोंका लोप होजाता है ।

लोहदण्ड । (अत्यन्त लज्जित होकर) मित्रवर ! क्षमा कीजिये, मैंने असली कारण न जाना था और मद्यके कारण मेधा ने मुझसे विद्रोह किया ! मित्र मैं लज्जित हूं । क्षमाकीजिये !

बज्रदण्ड । (हँसकर) अजी, इन बातोंको जानेदीजिये मैं इनका विचारही कब करता हूँ ? अच्छा आप अपना खांड़ा मुझे दीजिये अपनेही पहरे में मैं अपने बन्दीको सेनानायकके पास उनकी आज्ञा नुसार लिये जाता हूँ ।

{ से० लोहदण्ड अपना खांड़ा देताहै, बज्रदण्ड उसे लेकर, से० ऊदल के साथ जाता है । }

(नेपथ्यमें बड़ा कोलाहल होता है)

(नेपथ्य में) ये भागे ! वे गये ! अरे मरे ! अरे मरे ! दौड़ो, दौड़ो, जाने न पावें । अरे कोई भी नहीं है ! अरे ओ कायरो, डरते क्यों हो ? वे दोहैं ! तो क्या हुआ ? वे यमदूत थोड़ेहीहैं ! क्या कहा ? वे तो दृष्टि से भी लोप होगये ! हाय, अब हमारी हार हुई ?

तीसरा गर्भाङ्क ॥

कहरोर ॥

युद्धभूमि का मैदान ॥

(एक ओर आर्य-सैन्य चक्र-व्यूहमें से० ऊदल, यशोधर्मन और वज्रदण्ड के साथ खड़ी हैं, दूसरी ओर हूण-सैन्य मिहिरकुल और लोह-दण्डके साथ सर्प-व्यूह[1] बांधे खड़ी हैं।)

से० ऊदल। (गर्जकर) देखो रण में वीरकौन ? काको सपूत को ?

वज्रदण्ड। (गर्जकर) देखेंयुद्धपरान्तहूणकोकाटतचूको ?

यशोधर्मन। खड्ग उठाओ उच्च बांह सब करलो ऊंची,
करन भयङ्कर युद्ध सबन कहँ देओ सूची।

सब। जय सेनापति की! जय भारतमाता की! जय सैन्य सञ्चालक महाराजा यशोधर्मनकी! (सब कोई खड्ग ऊंचे करते हैं)

यशोधर्मन। अग्रपंक्ति बढ़जाउ, बढ़हु इकइककर निहचय,
बोलो सब जय भारत! जय भारत जय!

सब। जय भारत, जय भारत, जय भारत जय?

मिहिरकुल। भिड़जाओ काटो मारो, सब भेड़ बकरी हैं

---

१ व्यूह का विशेष हाल जानना हो तो 'धनुर्वेद संहिता' नामक पुस्तक देखिये।

तुम्हारे प्रचण्ड खांड़ों के सामने ये कुछ नहीं कर सकते। घायल भी न बचने पावें। इसी लड़ाई को जीतने पर कुल भारत अपनाहोगा। पह्मोंका माल अपना होगा टूटपड़ो।

{ दोनों दलोंमें घोरयुद्ध होताहै सेनापतिऊदल और महाराज यशोधर्मनसबोंको चीड़तेफाड़ते मिहिरकुल और लोहदण्ड के पास पहुँचतेहैं। }

यशोधर्मन। (सदर्प) सँभलजारे, नरकवासी पापात्मा तिरोमणि के कुवीर्य्यज! तेरा काल आन पहुँचा है! आज ईश्वर का स्मरण करले, तूने बड़े बड़े घोरतम पाप कियेहैं! आज निरापराध कृषकों की कृषि और निर्दोष पुरुषों के ग्राम जलाने का फलले, आर्य और बौद्धों के विद्यालय, मठ और मन्दिर तोड़ने का फलले। (गर्जकर) सँभल सँभल, (हांक देकर) जय भारतमाताकी? सँभल जा?

मिहिरकुल। (पैंतरेबदलकर) मिहिरकुल तुम लोगोंके यमराज को भी नहीं डरते! तुमतो भेड़ बकरीही ठहरे! (बिजली की तरह तड़ककर) सावधान!

(दोनोंमें घोर युद्ध होता है)

से०ऊदल। ओ छद्म भेषी कायर छली लोहदण्ड, तेरा काल भी आगयाहै। स्वामी के साथ तू भी नरक बास की यात्राकर?

लोहदण्ड। (अट्टहास करके) ह, ह, ह! आर्य छोकड़े

बड़ेही असभ्य होते हैं। हमारे हूण—पण्डित सत्य कहते हैं कि, आर्य लोगों को बोलना तक नहीं आता। अबे मूर्ख! तू जानता भी है कि, नरक आर्योंहीकेलिये तय्यार किया गयाहै और स्वर्ग केवल हूणों के लिये? मैं तो परसोंही महाशय को ठण्ढा कियेदेता था, पर तुम्हारे भाग्य अच्छे थे सो राज्य विद्रोही छली बज्रदण्ड ने तुम्हें बचा लिया! ओह! आर्य का कभी विश्वास न करे, मैं नहीं जानता था कि, बज्रदण्ड ऐसा नपुंसक, कायर, कूट, कुटिल, नीच और पापात्माहै? यदि ऐसा जानता होता, तो उसकी मोछें मुड़वाकर, काला मुँह करके, गर्दभ—महाशय पर पधरवाकर, अधजले कण्डों से पिटवाकर हूणछावनी के बाहर निकलवा देता? अस्तु, जो होगया सो होगया, यदि वह इससमय मिलजाय, तो उसे राज्यविद्रोहका स्वाद चखाऊँ।

से०ऊदल। मूर्ख! अधिक बक बक क्यों करता है? पहिले मुझ से लड़ले, तब बज्रदण्ड से लड़ना। मुझेजीतजांय तो समझना उसेभी जीतलिया; क्योंकि वह मेरा सहोदर है।

लोहदण्ड। (विस्मित होकर) सहोदर? (सदर्प) अच्छा सँभलजा?

{ दोनों में घोर तलवार चलतीहै। निर्बलताके कारण से०ऊदल धीरे धीरे पीछे हटता है, इतने में बज्रदण्ड आता है। }

बज्रदण्ड। (गर्जकर) हैं हैं, क्या लोहदण्ड ? सँभल पापात्मा! वह देख ऊदलने तुझे मारा।

लोहदण्ड। (तमककर) विश्वासघाती ? तुझे भी देखता हूँ। दोनों भाई एकसाथ नरक-वास के लिये जाना।

बज्रदण्ड। (स्वगत) कण्टकेनैवकण्टकम्। दुष्टताको दुष्टता से मारे जालको जाल से, छलको छलसे, छद्मको छद्मसे, दम्भको दम्भसे, शस्त्रको शस्त्रसे, क्रोधको क्रोधसे और विषको विषसे।

{ यकायक बड़े बेगसे बज्रदण्ड लोहदण्डके ऊपर टूटताहै और एकही सपाटे में सिर धड़ से भिन्न करदेता है। }

से०ऊदल। (क्रोधितहोकर) यह क्या किया ?

बज्रदण्ड। कण्टकेनैव कण्टकम्। अपना कर्तव्यकिया? ! सांपको उसीके बिल में मारा!

{ यशोधर्मन मिहिरकुलको मृतप्रायःकर पृथ्वीपर डालताहै हूण सैन्य घबरा जाती है और उसके पैर उखड़तेहैं। आर्यसैन्य जय, जयकार करती हुई बढ़ती है। }

से०ऊदल। (स्वगत) अहा, महाराज यशोधर्मनका शौर्य सराहनीय है। इनकी स्फूर्ति और इनके साहस से जान पड़ता है कि, ये अकेलेही संपूर्ण हूण—सैन्यको जर्जरितकर, नष्ट और विलुप्त करडालेंगे। अहा-, आज इनके नाम के पीछे भी

महाराजे, लगना चाहिये। विक्रमाब्द ५८२ को धन्य है! अवश्यही आज भारतका मैदान आर्य बीरों के हाथ आवेगा।

{ हूण सैन्य धीरेधीरे मोर्चें छोड़ती जातीहै। आर्यलोग बड़े उत्साहसे उनपर टूटते हैं। हूण-सैन्य मिहिरकुलके शरीरको कुचलती पिचल-ती भागती है। आर्यलोग 'जय भारत की' "जय भारत की' इत्यादि चिल्लातेहुये उनका पीछा करते हैं! अत्यन्त गड़बड़ी, गोलमाल और कोलाहल मचजाता है। हूणलोग रोते चिल्लाते हुये भागते हैं। }

यशोधर्मन। (सशक्ति) जय भारतकी 'जय भारत की। आज हमारी और हमारे गोलोकवासी सेनापति की प्रतिज्ञा पूर्णहुई। भारत माता प्रफुल्लित हुई। जय माता की!

भई प्रतिज्ञा पूर्ण कार्य सबही प्रभु साधत।
शिखा इकट्ठी करत साज उहिकहँ अब बांधत।

(खुली शिखाको बांधता है)

(सैन्य से) घायलों को मत मारना, भागे हुओं

१ 'महाराज' का पीछे लगना हम अङ्गरेज़ी के Great (ग्रेट) के बिलकुल बराबर समझते हैं। महाराज यशोधर्मन महाराज का अनुवाद हम अङ्गरेज़ी में Emper r Yashodharman the Great कर सकते हैं॥ चन्द्रगुप्त और अशोक भी ऐसे ही थे।

को मत सताना, पर उन्हें पवित्र-पाञ्चाल-भूमि के बाहर करके, आना। देखो, वे कहीं अड्डा न जमा पावें।

{ आर्य सैन्य हूणों का पीछा करती जातीहै। }
{ से० ऊदल और बज्रदण्ड साथ जातेहैं। }

(यशो धर्मन का प्रस्थान)

चौथा गर्भाङ्क पूर्ण हुआ॥

चन्द्र गुप्त महाराज (Chandra Gupta the Great) का विवरण हमारे चन्द्रगुप्त चमत्कार, नाटकमें देखियेगा। अशोक महाराज(Asok the Great) का जीवन भी भविष्यके अङ्क में है। ना० का

पाचवां अङ्क ॥

पहिला गर्भाङ्क ॥

रंथम्भोर ॥

उद्यान ॥

(से० ऊदल का प्रवेश ।)

(ठुमरी)

से० ऊदल । भारत में कैसी धूम छई !
नर नारी सबही प्रमुदितहैं,-सानँदहै यह देश,
मार, आर्यगन हून भगाये बिपदा आई गई ।
जो देखो सो रङ्ग मचावत, चैन मनावत गाढ़े,
गावत, खावत, जावत यहँ वहँ कर, भू सुक्ख मई ।
हर्षत सबही हूण-विजयसों, नाचत गावत सबही,
भारत सुख पावत, प्रफुलितह्वै दरसा छटा नई ॥
भारत में कैसी धूम छई !

(माल कोस ।)

और भी

कष्ट पै होत सुक्ख, अधिकाई,
दुख बीतत सुख होवतहै जग, सुख बीतत दुख होवै।
तप्त-ग्रीष्म पीछे आवतहै बर्षा अति सुखदाई ।
कीचन सों जब मन घिनयावत शोषत भूमि अ-
गस्त शिशिर सुहावनि आवत तबहीं, सुख दुख
कर भरमाई। तब जाड़ो हिय हिम-मय करके, मा-

रत वायु-थपेड़, जाड़े सों सब ठिठुर २ के बोलत सी दुखदाई। जब जाड़ो बीतत आवत तब ऋतु बसन्त मन-रञ्जन, दुख गञ्जन, भञ्जन केशादिक, मेटन बुद्धि--थकाई। यहिसों निश्चय मध्य अवस्था सर्वोत्तमहै चहुँवां,--ऐसी मीठी जैसे होवत दुख पै सुख सुखदाई।

(रानी पद्मावती का प्रवेश)

(होली सिन्दूरा)

रानी पद्मावती। होली खेलो बीरन, जयपाई।
दुर्गुण की होरी सुत जारौ, बारौ आलस ईंधन, अनउछाह को भण्डा बारौ, कायरताहिं जराई। सद्गुणकेरगुलालउड़ाओ,उभँग,उछाहमिलाई, शौर्य आदि की बड़ी छबीली मिलवहु सुखद अबीर, एका रंग अतिशय बरसाओ--, भरसक तेज जनाई, होली खेलो वीरन, जयपाई।

से० ऊदल। (प्रसन्न होकर) क्या भावज माता! अच्छे समय पर उपदेश दिया। आपतो योग दर्शन की पूर्ण ज्ञाताहैं न? तभी!

पद्मावती। (प्रफुल्लित होकर) आज भारत के उद्धार से मैं भी आपे में नहीं समाती--

से० ऊदल। क्योंकि आर्य-रक्त आप में भी तो वर्तमान है।

पद्मावती। सबसे अधिक प्रसन्नता तो हमें देवरानी मिलने की है। उससे भी अधिक प्रसन्नता तो इस

बात की है कि, तुम्हें तुम्हारा विस्मृत भाई मिल गया, और ऐसा जोकि, तुम्हारा प्रबल सहायक और भक्त है।

से० ऊदल। (जेबसे हार निकाल कर) भावज माता, आपके लिये तक्षशिला से यह सौगात लाया हूं। जिससमय हूणों को खदेड़ कर, भारत के बाहर कर आया था, उस समय उक्तस्थान में कुछ दिनों विश्राम किया था। वहां के राजा ने हूण-निष्कासन की बधाई में यह सौगात मुझे भेंट कीथी, यही आपके चरणों में अर्पित है कृ-पया ग्रहण कीजिये। [राजा युद्ध वीर आताहै।

(ऊदल पद्मावती को हार देताहै)

युद्धवीर। (स्वगत) मेरा संशय सत्य होगया। आह ! यह चाण्डालिनी इस पिशाच के साथ कैसी अठखेलियां कररहीहै ! आह ! योग वियोग का तो निरा ढकोसला ही था। विद्वान् सत्य कहते हैं कि पृथ्वी पर सम्पूर्ण बस्तुओं का नाप तौल है, पर स्त्री के कौटिल्य का कोई पता नहीं लगा सक्ता; कोई पार नहीं लगा पासक्ता। ऊदलने चाहे कितनेही बड़े बड़े काम किये हों, पर अब वह संसार में रहने योग्य नहीं रहा। सत्यहै, स्त्री के ब्यभिचारिणी होने से पुरुषकी मोछ नीची पड़जाती है, आँखें अन्धी होजाती हैं और चे-हरे का तेज नष्ट होजाताहै। इस कुकर्म को देख-कर, क्रोध, लज्जा और शील इत्यादि विचारों का

यकायक आवेश होआयाहै, इसीकारण से देह का रक्त ठण्डा पड़गयाहै और नसें व जोड़ ढीले पड़ गयेहैं। (कुछ निष्ठुर होकर) परन्तु मैं अपने तेज को इकट्ठा करता हूं, अब कदापि इन्हें दण्ड देनेसे न चूकूँगा।

(प्रगट कड़क कर) पापात्मा ऊदल, चाण्डाल क्षत्रिय; दुष्ट; तियाधम ! तुम दोनों को इसका कठिन दण्ड दिया जावेगा। (ऊदल से) लज्जा हीन कुलाङ्गार। क्या तू नहीं जानता कि जेठे भाई की पत्नी माता के बराबर होतीहै ! अपनेही बलमें अकड़े रहने वाले मूर्ख घमण्डी, अपनीही वीरता और झूंठी व पोची स्वदेश भक्ति की हेकड़ी मारने वाले दुराचारी, तेरा काल तेरी चाण्डालिनी प्रेम-पात्रीही के हाथ से होगा। इस दुराचारिणी सर्पिणी का दण्ड पीछे निश्चित होगा। ईश्वर करे दोनों को एक साथ नरक-वास मिले।

ऊदल। यदि तू क्षत्रिय-बच्चा है तो कल बिना किसी बिचार के और बिना किसी को जताये राज-महल में उपस्थित होना।

(पद्मावती को केश पकड़कर खींचलेजाता है)

{ऊदल धड़ाम से गिरकर, मूर्च्छित होजाताहै}

दूसरा गर्भाङ्क ॥

रन्थम्भोर ॥

राज महल ॥

{युद्धबीर नङ्गी तलवार लिये खड़ाहै। पद्मा-
वती नेत्र नीचे किये, घुटनों के बल बैठीहै।}

(दादरा धुन खम्माच ताल दादरा)

युद्ध बीर। अब नहीं बचती तू कुलटा है मेरे किरपान से,
अपने प्यारे के बिछोह में हाथ धो तू प्रान से।
तेरी कुशल अबहै इसी में सुनले ए व्यभिचा-
रिनी, होय अपने प्रेम की तूही नरक में तारिनी।
तुझको क्या यह ज्ञातहै; है कोप मेरा खड्ग सा ?
जो कोई आया तले कतरा गया वह घास सा।
क्या कभी संसार ने देखा था ऐसा पाप घोर–
योग, ब्रत मिश्रण करैं व्यभिचारके सँग लाजतोर!

(पीलू)

पद्मावती। (रोकर) स्वामि! तुमको ब्याहहीसे मानती हूं
ईशवत, फिर बताओ पग बिचारे हैं कहां औ बुद्धि
कत। हूं सदा से मानती ऊदल को प्यारे पुत्र सम,
छिः जो सुत से आंख जोड़ैहै वह पापी घोरतम।
मुझको मारो, उस बिचारेने किया क्या आपका ?
हाय! उसकी नव दुलहिनी क्या करैगी शापका!

ईशकी मैं साख भर कहती हूं सुनिये न्याय से,
ऊद मुझको मानताहै, बढ़के अपनी मात से।
भ्रातृ-हन्ता हूजिये मत; क्योंकि वह निर्दोष है,
वीरता शौर्यादि गुण का प्राणपति! वह कोष है,
ऐसे गुरु तमपाप की प्यारे, नहीं है मुक्ति भी,
उससे छुटकारा कराने में असम्भव शक्ति भी।

युद्धवीर। (खिसिया कर) चुप दुष्टा! व्यभिचारिणी! प्रचण्ड युद्धवीर सिंह अब इन बातों में नहीं आसक्ता! जैसे सूर्य के प्रकाश को बदली, अग्नि की प्रचण्ड ज्वालाको वस्त्र और बिषके तीखेपन को मधु नहीं ढक सक्ती, उसी भाँति तेरा पाप किसी प्रकार नहीं छिपसक्ता। (अत्यन्त निष्ठुरता से सुन, सँभलजा! तेरे सदृश कुलटा स्त्री को मैं अपने हाथों से मारकर, अपने खड्ग को कलङ्कित नहीं करूंगा। तू स्वयं अपनी हन्ता होगी! (कुछ धीमेसे) नहीं, पर तुम्हारे पतिव्रत की परीक्षा लूंगा; कि तुम मेरी आज्ञा में हो या नहीं।

पद्मावती। (कर बद्ध) आपकी कौनसी आज्ञा मुझे शिरोधार्य नहीं है?

युद्धवीर। (स्वगत हँसकर) हाँ चुड़ैल, समझता हूं! (प्रगट) तुम यह कहो कि, यदि मैं आज्ञा का किसीभाँति भी उल्लङ्घन करूं तो मुझे पतिव्रत भङ्ग का पाप लगे।

पद्मावती। (सविनय) ऐसा न कहलवाइये, प्राणनाथ यह बड़ा भयङ्कर है।

युद्धवीर। (तमक कर) बस तो जाने दो। अपराध इसीसे सिद्ध कर लूंगा।

पद्मावती। (निराश होकर) अच्छा महाराज, कहती हूं। क्रोधित मत हूजिये। यदि मैं आज्ञा का उल्लङ्घन करूं तो मुझे पतिव्रत भङ्ग पाप लगे। (स्वगत) हाय कहते तो मैं इस भयानक बात को कहगई, पर न जाने इसके साथ कैसा भयङ्कर प्रणांम मिलाहुआ हो! मेरे शरीर का रक्त ठण्डा पड़ता जाताहै, नसों और हृदय का धड़कना बन्द हुआ चाहता है। शिर में चक्कर आते हैं। हे जगदीश! रक्षा करो, येतो प्रलय के अपशकुन हैं। हा बेटा ऊदल! क्या तुम्हारे ऊपर मेरेही पापी हाथों से कोई भारी आपत्ति ढाई जावेगी? यदि केवल आपत्तिही हो, तो बेटा, उसके लिये तुम सहिष्णु, और कट्टर भी पूरे हो, यदि इससे भी कुछ अधिक हुआ, तो—.

(कण्ठ रुँधजाताहै, आंखों में आंसू आते हैं)

युद्धवीर। (राक्षसी विजयके चिह्न मुखपर लाकर) अच्छा तो सुनो। आज तुम ऊदल को निमन्त्रित करो। यहींपर उसे शयन भी कराओ। यदि उसके साथ (मुस्कराकर) उसकी नई दुलहिन भी आवे तो कुछ हानि नहीं। सबसे बड़ा और गम्भीर काम के सुनने के लिये सँभलजाओ। (निष्ठुरता से) शयनगृह में तुम एक खरी धार

वाली चमचमाती हुई छुरी लेकर, छिपजाना। जब देखो कि, पापी ऊदल सोगयाहै, तब बिना किसी दयाके बिचार के ऊदल के हृदय से अपना अनुचित प्रेम उस प्रखर छुरी की धार से दो टूक में कर डालना! यही तुम्हारी परीक्षाहै! प्रणपर दृढ़ रहना। बड़े गर्व से कहे हुये बचन मत भूल जाना। सावधान! सचेत!

पद्मावती। (अत्यन्त ब्याकुलता से) हा ईश! हा जगदीश! बज्रपात! लोमहर्षण! हा कठोरता! हा कठोरता! [मूर्च्छितहोती है।

युद्धबीर। (राक्षसी विनयकी आकृतकर) हैं, ऊदल ने तक्षशिला वाला हार दिया था न! अब उसी पिशाच को मारना पड़ेगा।

पद्मावती। (कुछजाग्रत्‌होकर, धीरे से) बस अधिक निठुरता न दिखलाइये। हे ईश्वर! रक्षाकरो! मेरी मृत्युही मेरी रक्षक होगी। पृथ्वी फाड़दीजिये जिसमें मैं समा जाऊँ। हे आकाश! उल्कापात क्यों नहीं करते! बिजली क्यों नहीं टूटकरगिरती?

[पुनः मूर्च्छित होती है।]

युद्धवीर। (झुँझलाकर) यह पापिन तो योंही बकती रहेगी, इस दुश्चारिणी का क्या ठिकाना! इसका यही दण्ड होगा कि, यह अपने पापी प्रेमीको अपनेही हाथों से मारे। (कुछ निराश होकर) पर मेरा भाई, मेरा सहोदर! (निष्ठुर दृढ़तासे)

अहा ! भाई है ? पूरा पापी, पूरा द्रोही और पूरा शत्रु ! किसी रोग के कारण जैसे सड़ाहुआ हाथ काटडालना पड़ता है इसीतरह ऊदल का मारा जाना भी है। (भयानक आकृतिबनाकर) जिस समय यह दुराचारिणी तियाधम कुलाङ्गारी अपने पापी प्रेमीको छुरियों का स्वाद चखावेंगी, उस समय इसको विश्वासघात का पूरादण्ड मिलजावेगा। इसकी आत्मा इससे विद्रोह करेगी इसको ऐसा जान पड़ेगी, मानो जीतीही जलाई जा रहीहै, मानो सैकड़ों बिच्छू एक साथ काटरहे हैं; मानों सहस्रों गिद्ध पीठका मांस नोचरहे हैं। कुछ (शान्तहोकर) क्या मैं ऐसा कराने में कुछ अन्याय करता हूँ ? असम्भवहै। अन्याय कभी नहीं होसकता । पापियों और अपराधियों को दण्ड न देना निर्दोषों को दण्ड देने से कहीं बढ़कर है। मैं दृढ़ हूँ ! मैं स्वस्थहूँ ! मैं परीक्षालूँगा !

(गया)

तीसरा गर्भाङ्क

रन्थम्भोर

राज–पथ

{ बज्रदण्ड का प्रवेश। }

(राग केदारा)

बज्रदण्ड। अहा ! यह मन्द वायु कस आई !
शीतलता कहँ पीठ चढ़ाके, पुष्पगन्ध ले आई;
लेत हिलोरैं चलत झकोरैं, चलत कबहुँ भर्राई।
एक दृष्टि जब पीछे फेंकत, आंख न परत लखाई;
भूतामित्र, बैरी, सन्तापक देखत काल बुढ़ाई।
निजकृत पूरे पापनहूँ कहँ देखत जिय गर लाई,
सुकृत नाम में शून्य लखतहौं दर्पण सुथरो पाई।

इस समय शीतल मन्द और सुगन्धित वायु से मस्तक परिष्कृत होगयाहै, इस कारण वह एक दर्पण बन रहाहै। पूर्वकाल के मित्र, शत्रु इत्यादि सबही दृष्टिगोचर होरहे हैं। (घबराकर) आज मेरी बाईं भुजा क्यों फड़क रही है? हृदय बिजली की तरह क्यों बार बार धड़क जाताहै ? आज रातभर करवटें बदला किया, पर नींद नहीं आई। कुस्वप्नों के कारण चौंक पड़ता था अब भी बड़ी बेचैनी होरही है ! आज रातभर कुत्ते भोंकाकिये

और कउए कांवकांव करते रहे। यद्यपि वेद-धर्म के अनुयायियों को इन दुराग्रहों को मानना अनुचित है, पर आत्मा आगन्तुक विपत्तिकी पहिले ही से सूचना देती है, इसकारण इन सबों को मानना पड़ताहै (बाईं भुजा का फड़कना देखकर) हाय, यहं दुष्ट भुजा बार बार क्यों फड़कती है ? इन सब अपशकुनों का क्या कारण है ? वह देखो, बाईं आंख भी फड़क रही है ! मेरा अब और क्या होना है ? न कोई आगे न कोई पीछे पर मेरे भाई; मेरे प्यारे भाई। (दूर पर रोनेका शब्द सुनकर) यह और एक नया, अपशकुन हुआ ! हे जगदीश ! रक्षाकरो, रक्षाकरो प्रभो ! तुम्हारी शरणहैं। (कउए कांव कांव करते हैं) हाय ! प्रातः तो हुआही नहीं ये पापी क्यों रवि के बदले विपत्तिकी सूचना कररहे हैं? देखूँ, राजमहल और भइया ऊदल के घर कुशलहै; वा नहीं है।

(गया)

चौथा गर्भाङ्क

रन्थम्भोर

राजमहल

{से० ऊदल पर्यङ्कपर पड़ा सो रहाहै। पद्मावती का भयङ्कर भेष में कटारलिये हुये प्रवेश।}

पद्मावती। (स्वगत) यहांपर कौन कौन है? दुष्टा पद्मावती, दृष्टि हीन खड्ग और निर्दोष ऊदल। हा! आज मैं उस प्यारे और खिलतेहुये फूलको छिन्न भिन्न करने के लिये बाध्य की गई हूँ जिसे देख कर उपवन के अन्य पुष्प खिलते हैं। जिस पुष्पने अपने चमत्कार से सबको चमत्कृत कर दिया था और लुभा लियाथा, हाय, आज वही पुष्प मेरे हाथ उपवन से तोड़कर कुचलडाला जावेगा। अज दिनेश को दुष्ट राहु सदाके लिये ग्रसलेगा। हाय! खिलतेहुये पुष्प के इस जीवनका यों अन्त होगा! (ऊदलके पासजाकर) अहा! कैसी निर्दोष निद्रामें लिप्तहै। स्वप्नदेव की मीठी लहरों में डुबकियां मार रहाहै, पर निष्पाप सदाचारी वीर वर ऊदल यह नहीं जानता कि, उसका बज्र काल सिराहनेही खड़ाहै! हा! जिन कपोलोंपर इस समय कमल भी लज्जित होते हैं, जिन ओष्ठों

पर सिन्दूरभी झखमारता है और अर्द्ध मुस्कराहटके कारण थोड़े खुलेहुये दांत जो श्वेत से भी श्वेत मोती को कुछ नहीं समझते, क्या थोड़े ही समय के हैं? हाय! हृदय फटकर टुकड़ों टुकड़ों में हुआ चाहताहै। हाय बेटा ऊदल! तुम को क्या मालूम कि, जिसे तुम माता कहकर, पुकारते थे वही आज तुम्हारे मारने के लिये बज्र हृदय बनंके, खड़ीहै! (ऊपर की ओर देखकर) हाय! आज आकाश ने भयानक आकृति धारणकी है। सूर्यनारायण प्रचण्ड कोपके कारण लाल होरहे हैं चापलूस नभभी क्रोधित होकर, लाल पीला पड़रहा है। पर भूकम्प क्यों सहानुभूति नहीं दिखाता? (रोकर) आज पृथ्वीसे एक बड़ाभारी सत्पुरुष उठा चाहताहै; फिर बिजली क्यों नहीं तड़तड़ाती? समुद्र भी अबतक क्यों नहीं बढ़ा? (दर्प्प से) प्रलय क्यों नहीं हुई? (ऊदलका मुख चूमकर) हाय! क्या यह मुख फिर देखने में नहीं आवेगा? बेटा तुमने मातृ सुखका अनुभव नहीं करपाया था, पिता का भी सुख न पाये थे। मुझही को माता जान, मुझे मानते और मुझे माताही सम चाहते थे। हाय! तुम्हें क्या ज्ञातथा कि, इसी दुष्टा के पापी हाथों से तुम्हारा निर्दोषही बधहोगा! हाय! अब अधिक नहीं देखाजाता! प्यारे! तुम्हारी मृत्यु मेरे हाथों से कभी नहीं होगी। मैं ईश्वरके सामने

क्या उत्तर दूँगी ? तुम्हारे बध से आत्मघात अधिकतर अच्छा है ।

(कटार हाथसे छूट पड़ती है)

ऊदल । (जागकर) यह अभी काहेका शब्द हुआथा ? क्या मुझ पापी के चिढ़ाने के लिये पृथ्वी हँसी थी ? (करवट बदलकर आह ! जो लोग किसी बात में निर्दोषही दण्ड पाते हैं, उन्हें यह नहीं समझना चाहिये कि, हमारे साथ अन्याय हुआ किन्तु वह दण्ड किसी पूर्वपाप का फल समझना चाहिये ।

(पद्मावती मूर्च्छितहोकर, गिरती है)

ऊदल । (चौकन्नाहोकर) यह क्या हुआ ? क्या उल्का पात है । (पद्मावती को देखकर) क्या भावज माता ? तुम्हारी यह क्या दशा होरहीहै ? (पास जाकर) क्या आत्मघात करोगी ? यह प्रखर कटार क्यों धारण कररक्खी है ? माता, माता ! बोलो । क्या मुझसे रुष्ट होगई हो ?

पद्मावती । (कुछ जाग्रतहोकर । आत्मघात नहीं बेटा ! तुम्हारा बध ! हा ! --हा ! --हा ! --(कण्ठ अवरुद्ध होजाताहै)

(पद्मावती छटपटानेलगती है और थोड़े समयमें मृतप्राय होतीहै)

ऊदल । (प्रसन्नहोकर, और कटार उठाकर) मेरा वध ?

यहतो बड़ेही आनन्दका समाचार है। मैंतो कह-रोरकेरण-क्षेत्रही में मारडाला गया होता, यहतो ईश्वर की कृपाहै जो अबतक जीतारहा। हाँ, शोक इतनाहै कि, उस समय मेरी मृत्यु से लोगोंको कष्ट होता इस समयकी मृत्यु से कई प्रसन्नहोंगे। अस्तु, माता! तुमको मेरे बधकरनेका कष्ट नहीं उठाना पड़ैगा,

मैंने छुटपनही से मरना मारना सीखाहै, सो भला मैं अब क्यों पीछे हटने वालाहूं? मृत्यु एक बड़ी सुखदायक वस्तु है, जिस बड़ी भारी विपत्ति से; जिस बड़े भारी दुःख से कोई सांसारिक जीव छुटकारा नहीं देखता, उससे मृत्यु पल भर में छुटकारा देसकती है। मृत्युदण्ड नहीं; एक इनाम है। यह इनाम अपने ही हाथों मिल सकता है। और तिसपर मुझ सरीसे नास्तिक और घोर पापियों के लिये तो मृत्यु कल्प वृक्ष है। (पद्मावती के मुखपर मृत्युके चिह्न देखकर) क्या माता का प्राण-पखेरू पञ्चतत्त्वजनित पींजड़े से उड़गया? हा! हृदय में चोट बड़ी गहरी लगी थी! अस्तु मुझे शोक सन्तापसे क्या प्रयोजन? मेरे लिये स्वर्गमें मेरी माता व्याकुल होरही होगी। उससे तुरन्त जाकर, मिलूंगा। किन्तु हा! मुझे मरने के पश्चात् भी शान्ति कैसे मिलेगी? उमा के प्रज्वलित हृदय की ज्वालाएँ मुझे वहां भी जलाया करैंगी, उमा के सन्तप्त

हृदयका आर्त-नाद मेरे हृदयके वहां भी सहस्रों टुकड़े किया करेगा। हाय! बड़े असमंजस में पड़ाहूं। बुद्धि कुछ काम नहीं करती। चारों ओर अन्धकारही अन्धकार दिखाई देता है। पीछे संसार, उसके क्षण-भंगुर सुख हृदयको आकर्षित कर रहे हैं, आगे माताकी प्रीति, और निर्दोषता की दृढ़ता मार्गदर्शक बन रही हैं। (दृढ़ता से) अच्छा तो इसी मार्ग का अनुसरण, करूंगा। निश्चिन्त हूं। उमा का ईश्वर रक्षक है। उसके लिये ईश्वर उसका मार्ग बतादेगा। मैं (कटार की ओर देखकर) अहा! यह भी मेरे हृदय के लोहू की प्यासी होरही है! मेरा अन्तःकरण बिलकुल शुद्ध है। आत्मा भी बिद्रोह नहीं करती! ईश्वर की अन्तिम प्रार्थना कर, इस कटार की प्यास बुझाताहूं और इस जन्मके किये हुये पापोंका प्रायश्चित्त करता हूं। (ऊपरकी ओर देखकर) हे जगदीश! हे करुणानिधि! हे सर्वशक्तिमान्! आप की शरण की आशा है। मुझे पूर्णतया विश्वास है, कि मैंने इतने पाप किये हैं कि, उनका गिनना अङ्कगणित के लिये भी असम्भव है। पर उसके साथ यहभी भरोसा है कि आप उन सबों को क्षमाकरेंगे और मुझे मुक्ति-प्रदान करेंगे। प्रभो! आप करुणा निधान हैं-दया की अतुल और सूक्ष्म सीमा आपही में समागई है, इससे हे जगतपिता! दयाके उस अ,

तुल कोष में से थोड़ी मुझे भी निकाल दीजिये। (कटार ऊंची कर) बस प्रभो! अधिक नहीं कहना है, आप अन्तर्यामी हैं, स्वयं सब बातोंको हृदय और बुद्धि की सूक्ष्मता से अधिक जानते हैं। इस पापात्मा के आत्मा का उद्धार कीजिये। इस नराधम के पापी जीवन का यह अन्त होताहै। प्रभो, शरण में लो!

{ कटार छाती में मारताहै और धड़ाम से गिरपड़ताहै }

(युद्धवीर का घबड़ाते हुये प्रवेश)

युद्धवीर। (रोकर) भय्या ऊदल! भय्या ऊदल! निर्दोष ऊदल! निरपराध ऊदल! यह तुमने क्या किया? हा! बिना विचारे काम करने का यह फल हुआ। पतिव्रता उमा और पुण्यमय ऊदल दोनों उठगये! हा! मेरे नेत्रों का प्रकाश जाता रहा! मैं बेपतवार की नौका होगया! मेरी दाईं भुजा टूटगई! मैंने अपने हाथ से अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी! (छाती पर कराघात करके) हा! इस घोरपापका क्या प्रायश्चित्त होगा? मेरे कारण संसार से दो अलभ्य रत्न उठगये! स्त्री फिर मिल सक्ती है और सब कुछ फिर मिलसकता है आहा! इस अभागे पापी को सहोदर फिर नहीं मिल सकता। हा! हृदय को ऐसी व्यथा होरही है, 'मानो लाखों सांप क्रमशः काट रहे हों; मानो करोड़ों गिद्ध आंखों की पुतलियां नोच नोच कर खा रहे हों! (वक्षःस्थलपर पुनः

कराघात करके) दुष्टता की सीमा का मेरे ऊपर अन्त होगया, अन्याय ने मानो मुझही को अपना ईश्वर माना ! हा ! मैं ऐसा घोर पापी हूं कि, ईश्वर को भी नहीं पुकार सकता ! (व्याकुलता के कारण त्वरा से इधर उधर घूमकर) पापत्मा ! पापात्मा ! नरक-कृम ! मैं बड़ा अभागी हूं। हा ! अपने सहोदर का हन्ता हुआ ! मुझ से बढ़कर घोर पापी क्या भूपृष्ठ पर कोई कभी हुआ होगा ? कभी नहीं ! न हुआ है; न है और न कभी होगा ! हा ! क्रोधने मेरी ज्ञान-चक्षुओं का प्रकाश खोदिया ! मैं अन्धा होगया ! दुरात्मा युद्धवीर ने अपने ही भाई को मारा ! यमदूत आकर, क्यों नहीं मेरे सूक्ष्म शरीर को महाघोर यन्त्रणाएँ देदेकर, फांसीपर लटकाकर, लेजाते ? क्या यमदूत भी मुझ से चिढ़गये हैं ? शास्त्र भी इसघोर पाप के प्रायश्चित्त बताने में असमर्थ हैं। तब फिर क्या करूं ? भाई के विना क्या यह पापी इस पुण्यमई भारत--भूमि में रहसकता है ? कदापि नहीं ! इसे तो नरक में भी स्थान मिलना अन्याय है। ईश्वर से दया की प्रार्थना करना उसे चिढ़ाना है। हा ! मुझे सम्पूर्ण संसार कण्टक और अन्धकार मय दिखाई देताहै। मुझे केवल निराशा का अवलम्ब है। वह निराशा भी कच्ची नींव पर जमी हुई है। मेरे लिये प्रत्येक दिशा में कुछ

नहीं के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई पड़ता। बस तो जिस बैरिन कटार ने मेरे भाई के कलेजे का लोहू चाटाहै, वही मुझे भी शान्तिप्रदान करेगी। (ऊदल के पास जाकर और उससे लिपटकर) प्राणप्यारे सहोदर! तनिक इस पापी की ओर आंख खोलकर, तो देखो! प्यारे! इस पापात्मा के जलते हुये हृदय और खोलती हुई आंखों को शान्त करो। (अधिक रोकर) हा! प्राणप्यारे का प्राण पखेरू इस दुराचारी को अथाह मँझधार में छोड़कर उड़गया अब मेरी कहीं गति नहीं है। (उमा को प्रणाम करके) वीर सती! इस दुष्ट को क्षमा करना। तुम सरीसी अलौकिक पतिव्रता और सदाचारिणी को कठोर आघात पहुँचानेवाला पिशाच शिरपर धूलडाले, यह खड़ा है। क्षमा करो! क्षमा करो! (पास जाकर) हा! तमभी तो इससंसारसे बिदा हो चुकीहो? अच्छा, तो अब मेरे यहां अधिक रहने का क्या प्रयोजन? जब रवि और चन्द्र दोनों सदाकेलिये लुप्त होगये तो पृथ्वी कैसे रहसकतीहै? पृथ्वी किससे गर्मी औरउजालापावेगी; किससे शान्ति और शीतलता पावेगी? हा! प्रलय होगया! रक्त की सरितायें बह निकलीं अग्नि का प्रचण्ड समुद्र उमड़ आयाहै! भूकम्प होरहाहै! हा! तब भी दुष्ट पापात्मा, नराधम, कुलाङ्गार युद्ध वीर का नरकवास नहीं हुआ! धर्मराज! इस पापी को सदेह

नरक-वास दो, क्योंकि मैंही इस पदकेयोग्य भारत में प्रथम हुआ हूँ। अब अधिक बिलम्ब अत्यन्त निरर्थक और व्यर्थ है। अपने प्यारे भाई और पतिव्रता पद्मावती की वहीं क्षमा-प्रार्थना करूंगा। उन दोनों के पुण्यमय चरण कमल पकड़कर, कहूंगा कि-हे प्रियतम देव देवी,! इस दुष्ट ने जो घोर कुकर्म किया है, उसका प्रायश्चित्त और उसकी क्षमा यहीहै कि, तुम धर्मराज से कहदो जिसमें मैं खौलते हुये वा ज्वाला-मय नरक-कुण्ड में एक कल्प तक बास करूं। इतने से कम दण्ड का मिलना न्यायका उपहास करनाहै! (दृढ़ता से) ऐसा नहो कि देव-देवी मेरे नरक-वास के पहिलेही स्वर्ग में उच्च सिंहासन पाजायँ और मैं उनके दर्शन भी न पासकूं। (ऊदलकी ओर देखकर) अहा प्यारे के मुखपर निर्दोषता की अब भी मृदु मुसक्यान झलक रहीहै! (कटार के प्रति) बस दुष्टा! तू मेरे प्यारे लोहू को बहुत चूस चुकी, क्या अभी तेरी प्यास नहीं बुझी? नहीं बुझी होगी! कैसे बुझेगी? जबतक दोनों भाइयों का रक्त पुनः एक स्थानपर न होजावेगा, तब तक तू कैसे तृप्त होगी (ऊदल की छाती से कटार निकालकर) करुणा के महा सागर! इस पापी को अन्तिम समय तेरा नाम लेने में लज्जा आती है। पर क्या करूं? डूबतों का तूही एक सहाराहै। पापियों का तूही एक आश्रयहै!

'असमीक्ष्य न कर्तव्यं कर्तव्यं सुसमीक्षितम्' वाला मन्त्र मुझे काटे खाताहै। हाय! भय्या को आत्म घात करते उसीसमय क्यों नहीं रोकलिया, जब वह पद्मावती से 'माता'! 'माता,! कहने लगा? अह! इन बातों में अब क्या धराहै? (कटार ऊंची कर) पापियोंका उद्धार करनेवाली! जलते हुये हृदयों को सदा के लिये शान्त करदेने वाली देवी! दो भाइयों का इस भांति अन्त करदेने वाली प्रचण्डिके! अपनी नोक मेरे कलेजे में इसभांति-भेदना कि, बिना एक ओह, के लिये ही, इस पापी जीवन का अन्त हो और सब एक साथ शान्त होजाय। हे जगदीश! आपकी शरण हूं।

{कटार का आघात करताहै और गिरपड़ता है। पापियों की भांति थोड़ी देर छटपटा कर, प्राण त्याग करता है।}

(बज्र दण्ड का प्रवेश)

बज्रदण्ड। (व्याकुल होकर) इस हत्याकाण्ड और उत्पात का क्या कारण है? (तीनों मृत-देहों को पहिचान कर) हाय! सब नष्ट होगया! सब छिन्न भिन्न होगया। यद्यपि मैं बज्रदण्डही नहीं, बज्र-हृदय भी हूँ, पर इस दुर्घटना को देख, बिना छाती पीटे नहीं रहाजाता। हा! अब इस राज्य का क्या होगा? पतिव्रता और सती उमा का क्या होगा? (अत्यन्त दृढ़ता-

से) अब मुझे इन रुलाने वाले और कठिन प्रश्नों के उत्तर देने का समय नहींहै। जन्म भर के घोर पापों और कुकर्मों का प्रायश्चित्त यह होगा कि, मैं इस अनाथ राज्य का कुछ प्रबन्ध कर, बनमें तपस्या करने चला जाऊं। (रोकर) हाय इस पवित्र कुलका एक क्रोध के कारण इस तरह अन्त होगया। हे ईश! रक्षा करो! संसार में कभी किसी को ऐसे भारी और कठिन दुःख का सामना न करना पड़े। क्रोध के अन्धे-पनका यह फल होता है, उसका यह हत्या-काण्ड, अच्छा दुःखदायी प्रमाणहै। बिना विचारे जो अनुभव हीन मनुष्य कोई काम कर बैठते हैं, उन्हें सिवाय पश्चात्ताप के और कुछ भी हाथ नहीं लगता। हे ईश्वर! हमारा दुःख दूरकर; सम्पूर्ण संसार का दुःख दूर कर!

(पटाक्षेप होता है)

पांचवां अङ्क पूर्ण हुआ ॥

ओऽम् शान्ति! शान्ति!! शान्ति!!!

इति